Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 6, August-2018, ISSN 2230-7540

आदिवासी समुदाय एवं उनके सामाजिक संगठन में पाई जाने वाली जातियों का एक अध्ययन

Mukesh Rani[1]*, Dr. Navita Rani[2]

[1] Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

[2] Assistant Professor, Sunrise University, Alwar, Rajasthan

सार - आदिवासी नाम का अर्थ है "मूल" और दो शब्दों से बना है: "आदि" और "वासी।" आदिवासी भारत की आबादी का लगभग 8.6% (10 करोड़) बनाते हैं। प्राचीन साहित्य में आदिवासियों को अत्विक (संस्कृत ग्रंथों में) कहा जाता था। आदिवासियों को महात्मा गांधी (पहाड़ियों पर रहने वाले लोग) द्वारा गिरिजन कहा जाता है। भारतीय संविधान में आदिवासियों को "अनुसूचित जनजाति" कहा गया है। आंध्र, गोंड, खरवार, मुंडा, खड़िया, बोडो, कोल, भील, कोली, सहरिया, संथाल, मीना, भूमिज, उरांव, लोहरा, बिरहोर, पारधी, असुर, तकंकर, और अन्य भारत के कुछ महत्वपूर्ण आदिवासी समूह हैं। इस लेख में आदिवासी समुदाय एवं उनके सामाजिक संगठन में पाई जाने वाली जातियों का एक अध्ययन किया गया है

कीबर्ड- आदिवासी समुदाय, सामाजिक संगठन, जाति

----------X----------

1. प्रस्ताबना

आदिवासी समाज का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है | दुखद है कि इतिहासकारों ने विधिवत तरीके से उनका इतिहास नहीं लिखा | आर्य और अनार्य संस्कृति से इनकी संस्कृति रही है । इनके स्वरूप और उत्पत्ति के सन्दर्भ में अनेकों किवदन्तियाँ प्रचलित हैं | आदिवासी समाज के हर एक समुदाय के साथ एक कल्पित रहस्यमय कहानी जुडी है | आदिवासी समाज का इतिहास वैदिक काल से माना जाता है | अब तक उसे लोग असुर, देत्य, दानव, राक्षस, जंगली, वनवासी आदि नामों से पुकारते रहे हैं | आज विद्वान और इतिहासकार इनके उत्पत्ति सम्बन्धी प्रश्नों को अपनी खोजों से हल करने के प्रयास में लगे हैं |[1]

विश्व के तमाम भूगर्भशास्त्रियों तथा पुरातत्त्ववेत्ताओं का विचार है कि पृथ्वी की उत्पत्ति 35 करोड़ वर्ष पूर्व हुई | उसका प्रारम्भिक स्वरूप हवा के रूप में, द्रवित, दहकता आग का गोला था | कुछ समय पश्चात यह तप्त गोला ठंडा होकर धूल, मिट्टी, पत्थर और चट्टान के रूप में तब्दील हो गया | पृथ्वी का बदला हुआ यह रूप एक चौथाई भूतीन बाकी और बना हेतु निर्माण के सृष्टि भाग-चौथाई भू रहा युक्त से जल भाग-| इस बदले हुए प्रारंभिक भू भाग-पेंजिया ने वैज्ञानिकों को नाम दिया ओर फिर बाद में यह पेंजिया 20 करोड़ वर्ष पूर्व धीरेहो विभाजित में भागों दो धीरे- गया पहला उत्तरी भू में रूप के खंड-भू दक्षिणी दूसरा और खंड-| विभाजित भूउत्तरी से में खंडो- भूलौरेशिया को खंड-(अन्डोद्दीपलैंड गोंडवाना को खंड-भू दक्षिणी खं ((गंडोद्दीप :(नाम के से जाना गया | फिर लाखों वर्षों के भू बदलाव गाभिक-लैंड गोंडवाना यह बाद के आने पांच भागों में विभक्त हो गया, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, कोयामूर, आष्टेलिया एवं अंटार्कटिका जिसे हम गोंडवाना के पंच महाद्वीप के नाम से जानते हैं | भौगोलिक ओर मानवशाखस्त्री वैज्ञानिकों ने यह बाकायदा अनुसंधान करके सिद्ध किया कि जीव जगत की प्रथम उत्पत्ति इस जगत में व्याप्त मिट्टी, हवा, पानी, आदि से हुई | गोंडवाना लैंड में माता वंश मूल विस्तारित प्रथम से पिता-ही आज की गोंड आदिवासी समाज माना गया है |[2]

2. आदिवासी: अर्थ एवं स्वरूप

ऐसा समुदाय जिसका वजूद सिर्फ इतिहास में ही नहीं बल्कि वेद, पुराणों में भी दर्ज है, जिसे हम आदिवासी कहते हैं | आज भी लोगों में आदिवासी समाज के प्रति भ्रम बना हुआ है कि आदिवासी कौन हैं, किसे कहते हैं, ये कहाँ से हैं ओर देखने में कैसे लगते हैं इत्यादि | वर्तमान में आदिवासी समाज के बारे में

www.ignited.in

बहुत कुछ लिखा जा रहा है, परन्तु जब हम आदिवासी शब्द पर विचार करते हैं तो इस पर अधिकतर विद्वानों की राय अलग-अलग दिखाई देती है | कुछ लोग उसे विशिष्ट पर्यावरण में रहने वाला, विशिष्ट भाषा बोलने वाला, प्राचीन काल से जंगलों और पहाड़ों में निवास करने वाला, जनजाति, ट्राईबल, ट्राइब, आदिम निवासी, जंगली निवासी, प्रिमिटिब रेख, अनुसूचित जनजाति, वनजाति, वनवासी, आदिमजाति, आदिनिवासी, मूल निवासी आदि संज्ञा से विभूषित करते हैं | बहुत से भारतीय और पाश्चात्य समाजशास्त्री, मानवशास्त्री वेज्ञानिकों ने आदिवासी समाज पर सविस्तार अपने महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किये हैं[3]

- **डी.एन. मजूमदार -** एक जनजाति परिवारों अथवा परिवार समूहों का एक ऐसा समुदाय है जो एक सामान्य भाषा बोलते हैं और विवाह, व्यवसाय या उद्योग के विषय में कुछ वर्जनाओं का पालन करते हैं और उन्होंने परस्पर आदान-प्रदान और कतंव्यों की पारस्परिकता की एक अच्छी तरह जाँची हुई व्यवस्था विकसित कर ली है |

- **डॉ. गोविन्द गोरे -** भौगोलिक दृष्टि से दूसरों से सदा दूर अर्थात् गिरि कंदराओं में रहने के कारण से जंगल में रहने वाला प्रकृति के सहवास में पलकर बड़ा हुआ, वही आदिवासी है |

- **इम्पेरियर गजेटियर -** जनजाति समुदाय परिवारों के एक ऐसे समूह का नाम है जिसका अपना एक विशेष नाम होता है, जो एक-सी बोली बोलता है और समान क्षेत्र में निवास (या निवास का दावा) करता है तथा अंतर्विवाही होता है, चाहे मौजूदा समय में अंतर्विवाही न भी हो|

3. समुदाय की अवधारणा एवं आदिवासी समाज

भारत में अनेक समुदाय के लोग निवास करते हैं | इस देश की सबसे ख़ास बात यह हे कि अलग-अलग वेष-भूषा, रंग-रूप में रहने के बावजूद इनकी सामुदायिक प्राकृतिक संरचना अद्भुत ओर अतुलनीय है, इसलिए भारत देश को अतुल्य भारत के नाम से भी जाना जाता है | समुदाय/ शब्द को अनेक समाजशास्त्री, मानवशास्त्री विद्वानों ने अपने मतानुसार भिन्न-भिन्न रूपों में व्याख्यायित किया है | कोई उसे जाति, वर्ग और राष्ट्र के सन्दर्भ में व्याख्यायित करता है और कोई गाँव,शहर या छोटे-छोटे समूह में रहने वालों के पक्ष में अपना मत प्रकट करता है, जो निम्नलिखित हैं –[4]

- **रमेंद्र -** समुदाय एक मौलिक समाजशास्त्रीय अवधारणा है | इसका इस्तेमाल किसी गाँव, शहर, जनजाति या राष्ट्र के लिए किया जाता है |

- **मैकाइवर एवं पेज -** जब किसी छोटे या बड़े समूह के सदस्य इस प्रकार एक साथ रहते हैं कि उनके बीच किसी विशेष हित की नहीं, बल्कि सामान्य जीवन की बुनियादी शर्तों की साझेदारी रहती है, तो हम ऐसे समूह को समुदाय कहते हैं |

- **डॉ. जे.पी.सिह -** समुदाय की विवेचन में कुछ बातें ऐसी हैं कि जिनसे यह भ्रम होता है कि समुदाय एक आत्मनिर्भर, स्वतः विकसित सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था हे | पर, बात ऐसी नहीं हे, वास्तविकता यह है कि समुदाय समाज की अनेक संरचनाओं में से एक है |

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि समुदाय में व्यक्ति के आचार- व्यवहार आदि सब कुछ निहित होते हैं | समाज में कई तरह के समुदाय रहते हैं जैसे - हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख ओर ईसाई इत्यादि | इन सभी समुदायों का प्रभाव व्यक्ति पर निश्चित रूप से पड़ता है साथ ही इनके रहने, खाने-पीने, सोचने-समझने की क्षमता, चितन-मनन, भाषा इत्यादि पर भी इसका प्रभाव बड़े ही गंभीर रूप से पड़ता है | भारतीय समाज कार्य अधिवेशन (952) के बाद एक जनजातीय कल्याण समिति का गठन किया गया, जिसमें आदिवासी समुदाय को चार भागों में विभाजित किया गया |

1. जनजातीय समुदाय

2. अर्द्ध-जनजातीय समुदाय

3. परसंस्कृति कृत जनजातीय समुदाय

4. पूर्ण रूपेण आत्मसात्कृत जनजातियाँ

4. आदिवासी समुदाय की सामाजिक संरचना खं परिवेश

4.1 आदिवासी / जनजातीय समुदायों की सामाजिक संरचना

सामाजशास्त्रीय वैज्ञानिकों ने जनजातीय समुदायों की सामाजिक संरचना की अवधारणा पर अलग-अलग विचार व्यक्त किये हैं | इस सन्दर्भ में विद्वान मतैक्य नहीं हैं | सामाजिक संरचना का अर्थ मानव के मध्य स्थित वास्तविक सम्बंध से हो या फिर महज एक व्यवस्था से अथवा आदर्शवादी

www.ignited.in

नियमों के अंतर्गत एकजुटता से, ये सब सामाजिक संरचना के ही अंग माने जाते हैं |

सामाजिक संरचना की स्थिति वह है जो समाज में निरंतर, धाराप्रवाह बनी रहती है | इस संरचना के अंतर्गत हमारे पारिवारिक सम्बंध आते हैं जेसेपिता-माता -, भाईबहन-, चाचा- आदि चाची| इसके साथ ही उनसे जुडी हुई रीतिरिवाज-, कला-सौंदर्य, अधिकार तथा उनके प्रति अपने कर्तव्य आदि सब सामाजिक संरचना के निहित आते हैं | समाज एक सामाजिक व्यवस्था पर आधारित होता है | समाज को चलाने के लिए सम्बन्धों का होना नितांत आवश्यक है । क्योंकि सामाजिक संबंध पर ही मानव का अस्तित्व निहित है | इसके बगैर कोई भी सामाजिक संरचना अपने विकासात्मक रूप में नहीं आ सकती | सामाजिक व्यवस्था को एक नई दिशा देते समय कभी- कभी उसमें बड़े-कभी जैसे हैं रहते होते भी परिवर्तन चूल-आमूल बड़े- माँ गोत्र का पुत्री-पुत्र कभी या पिता से शुरू होता है | खासी जनजाति में पुत्र का गोत्र नाम माँ के आधार किया जाता है ||[5]

4.2 आदिवासी / जनजातीय समुदाय की पारिवारिक संस्था

परिवार मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है | जीवन को सुचारु रूप से चलाने के लिए जिस प्रकार से रोटी, कपड़ा और मकान की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार से मानव को जीवन जीने के लिए एक सुव्यवस्थित परिवार संस्था की जरूरत होती है | परिवार के बिना किसी भी समाज का कोई अस्तित्व नहीं होता है| मानवीय सभ्यता और पारिवारिक संस्था का हमेशा से ही घनिष्ठ सम्बंध रहा है| मानवीय विकास में परिवार की महती भूमिका रही है| इसी वजह से उसके अन्दर संस्कृति और विकास की भावना उत्पन्न होती है और उसी संस्कृति के आधार पर उसका उतरोत्तर विकास होता रहता है। पारिवारिक संस्थाओं में कई संस्थाएँ होती हैं जेसे - मातृसत्तात्मक, पितृसत्तात्मक, बहुपति-बहुपली, एकल या संयुक्त परिवार आदि| इन सभी परिवारों के मध्य आचार-विचार, रहन-सहन, वर्ण व्यवस्था, मुखिया, विवाह संस्कार आदि संस्कृति मौजूद रहते हैं| परिवार संस्था की परिभाषा देते हुये मेकाइवर एवं पेज लिखते हैं - परिवार एक ऐसा समूह है जो स्त्री-पुरुष के यौन संबंध पर आधारित है और यह समूह इतना सुनिश्चित और टिकाऊ होता है कि इसके माध्यम से प्रजनन-क्रिया और बच्चों के पालन-पोषण की समुचित व्यवस्था होती है| बर्गेस खं लॉक का कथन है -परिवार व्यक्तियों का ऐसा समूह है जो विवाह, रक्त अथवा गोद (दत्तक प्रथा) के संबंधों पर आधारित होता है, यह समूह एक गृहस्थी का निर्माण करता है जिसके अंतर्गत परिवार के सदस्यगण पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन की विभिन्न भूमिकाएं अदा करते हुए एक-दूसरे से अंतः क्रिया करते हैं, एक-दूसरे से भावों और विचारों का आदान-प्रदान करते हैं और इस प्रकार परिवार के लिए एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं| [6]

4.3 आदिवासी / जनजातीय परिवारों की विशेषता

भारतीय जनजातीय परिवारों की विशेषता का अवलोकन निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है.

- परिवार के सदस्यों की संख्या के आधार पर या सदस्यता के आधार पर |
- वेवाहिक स्वरूप के आधार पर |
- परिवार सत्ता, वंश के नामकरण और उसके विकास के आधार पर |

परिवार के सदस्यों की संख्या या सदस्यता के आधार पर हम जनजातीय परिवारों को एकाकी परिवार, विवाह द्वारा निर्माणित परिवार, संयुक्त परिवार में विभाजित कर सकते हैं |

5. सामाजिक संगठन

जनजाति का सामाजिक संगठन उसके परस्पर आंतरिक समूहों के संबंधों पर आधारित होता है| भारत की जनजातियों में प्रायः देखा गया है कि ये लोग दूसरे आदिवासी समूहों से मेल-जोल कम रखते हैं | जिसका आने वाले दिनों में बेहद मयानक परिणाम हुआ और कई भाषाएँ-बोलियाँ विलुप्त हो गई | कुछ ऐसी जनजातियाँ हैं जो भौगोलिक परिस्थितियों की वजहों से आपस में मेल-जोल रखती हैं जेसे - छोटा नागपुर की मुंडा और ओरांव जनजाति | ये आर्थिक सुददढ़ता हेतु संगठन में एक जुट हो करके कार्य करते हैं | इनमें अंतर्विवाही एवं बहिर्विवाही प्रथा भी देखने को मिलती है | कुछ जनजातियों में फेट्रियां और मोइटियाँ पाई जाती हैं | कुछ भारतीय जनजाति ऐसे हैं जिनका सामाजिक संगठन मजबूत है, जो निम्नलिखित इस प्रकार से हैं –[7]

कादर जनजाति

इस जनजाति के लोग अपने भरण-पोषण के लिए भोजन का संग्रहण करते हैं जिनमें मुख्य शिकार करना शामिल है | इनमें मछली मारने और खाने का कार्य लगभग न के बराबर होता है | कादर जनजाति में, माता-पिता की सत्ता में कोई भेद-भाव नहीं होता दोनों की अपनी विशिष्ट पहचान है | सामाजिक व्यवस्था में मामा की मुख्य भूमिका होती है | इनमें नामकरण का आधार माता-पिता के व्यक्तित्व पर आधारित होता है या फिर स्वयं के गुणों के आधार पर | गरीबी के कारण संपत्ति इनमें कम ही पाई जाती है | जिस प्रकार से कई जनजातियों में संपत्ति के स्वामी

www.ignited.in

होते हैं उस तरह से इनमें प्रथा नहीं पाई जाती है | अगर कोई कादर जनजाति परिवार मर जाता है तो उसकी संपत्ति उसके अगल-बगल निकट संबंधी वाले (व्यक्ति/समूह) को मिलती है | ज्यादातर संपत्ति कम आयु वालों को ही मिलती है | कादर लोग बाँस से बनी झोंपड़ियों में निवास करते हैं |[8]

हो जनजाति

हो सामाजिक व्यवस्था अन्य जनजाति की अपेक्षा भिन्न होती है | इनके यहाँ कई गाँवों को मिलाकर एक ही परिवार बनता है ओर कई पीरों को मिलाकर एक कोल्हन | हो जनजाति में एक कोल्हन के अंतर्गत 26 पीर आते हैं ओर एक पीर के अधीन कई गाँव | हर गाँव की सीमा में भूरे रंग का मजबूत पत्थर गड़ा हुआ होता है | गाँव दो या दो से अधिक विभागों में विभाजित होता है| जिसे टोला कहा जाता है | एक टोले से दूसरे टोले की दूरी थोड़ी सी रहती है | कुछ गाँवों में अखाड़े होते हैं ओर नजदीक ही गिति ओरा (कुमार गृह) होता है | हो जनजाति बहिरविवाही होते हुए भी अंतर्विवाही होते हैं | इनका गोत्र टोटम पर आधारित होता है |

मुंडा जनजाति

छोटा नागपुर की मुंडा जनजाति कई पीरों में विभाजित होती है । प्रत्येक पीर का एक मुखिया होता है | अनेक पीरों को मिलाकर एक जनजातीय क्षेत्र का निर्माण होता है | मुंडा समुदाय मुंडारी बोलता है |

खोंड जनजाति

उड़ीसा ओर गंजाम क्षेत्र की खोंड जनजाति अनेक बहिर्विवाही ग्रामीण इकाइयों में बँटी होती है जिसे गोची कहते हैं | प्रत्येक गोची के पास छोटा या बड़ा भूमि क्षेत्र होता है | कई गोचियों में बँटे हाने के बावजूद ये स्वामिभक्त ओर निष्ठावान होते है |[9]

गोंड जनजाति

गोंड जनजाति में कई गोत्र पाए जाते हैं जिनको निम्नलिखित चार वर्गों में बांटा जा सकता है –

- **टोटमवादी समूह**

इसमें वे गोत्र आते हैं जो टोटम के आधार पर आधारित होते हैं जेसे - गौह, टीकम, लोहा, त्रिगमआदि |

- **व्यंग्य नामों पर आधारित**

इस समूह के गोत्र व्यंग्य नामों पर आधारित होते हैं जैसे - सुब्बेदार, मूजारे, पेडम तथा लौन चटिया इत्यादि |

- **स्थानीय गोत्र**

इसमें वे गोत्र आते हैं जो स्थानीय नामों पर उनके नाम रखे जाते हैं | उदाहरणार्थ - महानदिया, जोनपुरिया, गुसर मुजिया, रतन पुरिया आदि |

- **पित्रों के नाम पर आधारित गोत्र**

इसमें कुछ लोगों के पुरुखों (पित्रों) के आधार पर नामकरण होते शांडिल्य, कश्यप, वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि |

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे समूह हैं जो छोटे-छोटे समूहों में विभाजित हो गये ओर कालांतर में उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर उनका नामकरण कर दिया गया है | जिनमें कुछ नाम इस प्रकार से है - 1. राजगोंड - इनमें वे गोंड आते हैं जो आर्थिक स्थिति से मजबूत थे, जेसे - मालगुजार, पटेल आदि | 2. घुर गोंड - ये वे लोग थे जो दूसरे के यहाँ खेती करते थे और अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे | जेसे - प्रधान, ओझा आदि | 3. श्रमिक गोंड - ये वे लोग थे जो दूसरे के यहाँ मजदूरी करते थे ओर अपना जीवन यापन करते थे |[10]

टोडा जनजाति

यह जनजाति नीलगिरि की पहाड़ियों में निवास करती है | इनकी सामाजिक संगठन प्रक्रिया द्वेघ पद्धति पर आधारित है | यह अंतर्विवाही होते हैं | ये दो गोत्रों में बंटे होते हैं | जिसे हम तिवालियन और तारथारोल कहते हैं | तिवालियन 6 बहिरविवाही और तारथारोल 2 बहिर्विवाही गोत्रों में बंटे होते हैं | तिवालियन समूह में पशुपालन का कार्य होता है और तारथारोल में दुग्धशाला का कार्य अधिक पाया जाता है | टोडा परिवार पितृ स्थान होने के कारण पितृवंशीय होता है परन्तु मातृवंशीय सत्ता भी इनमें अहम होती है | टोडा जनजाति में बहुपल्ली और बहुपति विवाह दोनों पाये जाते हैं | अधिकतर इनमें समूह विवाह होता है | टोडा पितृवंशी होने के कारण संपति का अधिकार पुत्र को मिलता है ओर मृत्यु आदि जैसे संस्कारों की बात आती है तो मातृवंशीय संस्कार लागू होते हैं | द्वेघ संगठन का उदाहरण टोडा के अतिरिक्त असम के गारो समाज में मिलता है | गारो में मातृवंशीय संस्कार पाये जाते हैं और ये मरक तथा संगमा नाम से दो वगा मे बंट होते हैं | जिनमें आपस में विवाह सम्बंध अवेध माना जाता हैं |

अंडमान-निकोबार द्वीप जनजाति

यहाँ की जनजाति आकार में छोटे कद-काठी के होते हैं और प्रायः एक दूसरे की प्रत्येक भाषाओँ के आधार पर दूसरे से अलग हैं | सभी जनजाति स्थानीय समूहों में बँटी होती हैं | जिससे

www.ignited.in

अनेक परिवार बनते हैं | यहाँ की स्थानीय समूह की बोली, भाषा सब धीरे-धीरे विलुप्त होती जा रही है |

यह देखा गया है कि जो जनजाति स्त्री-पुरुष जिस स्थान पर जन्म लेता है वह वहीं का निवासी हो जाता है | कुछ जंगलों में रहने लगते हैं तो कुछ समुद्र के किनारे अपना निवास स्थान बना लेते हैं | जो समुद्र के किनारे रहने वाले जनजाति होते हैं वह जंगल की जनजाति की अपेक्षा अधिक घुमंतू होते हैं | ये प्रायः कैम्पों में रहते हैं लेकिन वह ज्यादा दिन एक ही स्थान पर नहीं रहते और वह अपना स्थान बदलते रहते हैं | इनमें विवाहित जोड़े, अविवाहित और विधुर समूह अलग- अलग समूहों में रहते हैं | लम्बी आयु तक अविवाहित जीवन जीने वाली स्त्रियों की झोपड़ी अलग खाई पड़ती है | अंडमान निवासी जनजातियों में तीन प्रकार के आर्थिक समूह पाये जाते हैं -

खासी जनजाति

खासी समुदाय खासी भाषा बोलता है | मेघालय तथा असम की पहाड़ियों में रहने वाली खासी जनजाति मातृसत्तात्मक परिवार में विश्वास करती है | ये आधथिक आधार पर गोत्र वर्ग में बंटे हुए होते हैं जेसे शाही -, पुजारी, मंत्री ओर सामान्य गोत्र आदि | इनमें अलगसामाजिक अलग- संगठन देखा जा सकता है पर उनमें अंतर्विवाही संबंध पर कोई रोक है नहीं थाम-| उनमें आने वाले गोत्र बहिविवाही होते हैं, उसके बावजूद खासी लोग अंतर्विवाही हैं | भारतीय संविधान में भारत में निवास करने वाली अधिकांश आदिम जातियों को अनुसूचित जनजाति की श्रेणी में रखा गया है | जिनआद जिन-िवासियों को अलगके क्षेत्र तथा राज्य अलग-आधार पर चिन्हित किया गया है उन समुदायों की एक प्रामाणिक सूची इस अध्याय के साथ संलप्न की जा रही है जिससे हम आदिवासी समुदायों के विषय में प्रमाणिक ढंग से जान सकें | यहाँ पर कुछ घुमन्तू जनजातियों के नाम भी हैं | कुछ जनजातियाँ ऐसी हैं जो आदिम जनजाति समुदाय के अंतर्गत आती हैं | जारबा, सेंटिनलीज आदि ऐसे ही आदिम जनजाति समुदाय हैं जो अंडमान हैं करते निवास में द्वीप निकोबार-| अभी कुछ समुदाय जिनके पास अपनी जनजातीय पहचान तथा जनजातीय भाषा है किंतु वे इस सूची में अभी भी नहीं आ पाये हैं जैसे असम के कोच राजवंशी आदि | कुछ जनजाति समुदाय अपने मूल राज्य में ही आदिवासी वर्ग में आते हैं किंतु वे अन्य राज्यों में सामान्य श्रेणी के अंतर्गत आते हैं जेसे मीणा समुदाय उत्तर प्रदेश, हरियाणा और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में सामान्य श्रेणी में हैं | गोंड समुदाय भी उत्तर प्रदेश में कहीं जनजाति समुदाय के अंतर्गत आते हैं ओर कहीं पर पिछड़े वर्ग के अंतर्गत आते हैं | जिन जनजाति समुदायों के पास अपनी जनजातीय भाषा नहीं है उन्हें जनजाति मानने में परेशानी होती हैं | किंतु उनकी जनजातीय भाषा लुप्त हो चुकी है | प्रत्येक जनजाति समुदाय की मूल पहचान उसकी जनजातीय भाषा तथा जनजातीय संस्कृति से होती है | कुछ ऐसे मुस्लिम समुदाय हैं जिन्हें अनुसूचित जनजाति वर्ग के अंतर्गत रखा गया है |

6. निष्कर्ष

आदिवासी समुदाय का सैद्धांतिक विवेचन में अध्ययन करने पर पता चलता है कि आदिवासी समाज का इतिहास प्राचीन होने के साथ ही बड़ा ही पारम्परिक रहा है | भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने आदिवासी शब्द को अपने परिभाषित से मतों अपने-कोशिश की करने की है | कुछ विद्वान इन्हें आदिवासी, ट्राइबल, वनजाति, आदिमजाति, जनजाति, वनवासी, विशेष पर्यावरण में रहने वाला इत्यादि नामों से व्याख्यायित करते हैं, परन्तु मुझे सभी के विचार लगभग एक जैसे ही लगे, किसी ने यह नहीं कहा कि आधुनिक सभ्यता से दूर पहाड़ों एवं जंगलों में निवास करने वाले आदिम समुदाय के लोग जो अपनी ही परम्पराओं में जीते हैं आदिवासी कहलाते हैं |

संदर्भ

1. अनुराधा पॉल उत्पत्ति गॉड -, इतिहास तथा संस्कृति, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2014, पृष्ठ – 29
2. चन्देश्वर यादव का समाज आदिवासी - (.संपा) मूल्यांकन वैचारिक, आगमन प्रकाशन, हापुड, संस्करण -2014, पृष्ठ – 08
3. जगदम्बा मल्ल - स्वतंत्रता सेनानी रानी गाइदिन्ल्यू, हेरिटिज फाउंडेशन, गुवाहाटी, असम, संस्करण - 2014
4. सुनील गोयल, सुनीता गोयल सामाजिक में भारत - परिवर्तन, आरपब्लिशर्स .एस.बी., जयपुर, 2003, पूछ-47
5. मस्तराम कपूर - नैतिक लोकतंत्र की तलाश, अनामिका प्रकाशन एन्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण - 2008, पृष्ठ-307
6. डॉड्ज्ञानेश्वर वाल्हेकर- आदिवासी मराठी साहित्य : एक अभ्यास, स्वरूप प्रकाशन,ओरंगाबाद, संस्करण - 2009, पृष्ठ-4
7. डॉ.श्यामराव राठोड़ - साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन, मिलिद् प्रकाशन, हेदराबाद, संस्करण - 2001, पृष्ठ - 37

8. रमणिका गुप्ता (संपा.) - आदिवासी लोक भाग-, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण - 2012, पृष्ठ - 5

9. डॉ.श्यामराव राठोड़ - साठोत्तर हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जन-जीवन, मिलिद् प्रकाशन, हेदराबाद, संस्करण - 2001, पृष्ठ - 36

10. समकालीन जनमत पत्रिका, सितम्बर - 2003, आलेख- वीरभारत तलवार, पृष्ठ-48

Corresponding Author

Mukesh Rani*

Research Scholar, Sunrise University, Alwar, Rajasthan